भारतीय डाक विभाग
Department of Posts
India

स्वामी एकरसानन्द सरस्वती
SWAMI EKRASANAND SARASWATI

विवरणिका
BROCHURE

तकनीकी आंकड़े
TECHNICAL DATA

जारी करने की तारीख Date of Issue	: :	04 दिसम्बर, 2014 04 December, 2014
मूल्यवर्ग Denomination	: :	500 पैसा 500 p
मुद्रित डाक–टिकटें Stamps Printed	: :	6 लाख 0.6 Million
मुद्रण प्रक्रिया Printing Process	: :	वेट ऑफसेट Wet Offset
मुद्रक Printer	: :	प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद Security Printing Press, Hyderabad

© डाक विभाग, भारत सरकार। डाक–टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास हैं।

© Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the stamp, first day cover and information brochure res with the Department.

मूल्य ₹ 5.00

SWAMI EKRASANAND SARASWATI

Swami Ekrasanand Saraswati, was a great saint, who devoted his entire life to the service of humanity. He was born on 29th August, 1866 in a Brahmin family to Pt. Radha Krishna and his wife Palubai, at village Bhuriyana, district Jodhpur, in the state of Rajasthan. His childhood name was Narayan Das.

Since childhood, young Narayan Das showed qualities of politeness, kindness, courtesy, etc. He practised deep meditation at Badrinath Dham, in the upper Himalayan valleys. Afterwards, he went to Kashi, where he met Swami Ganeshanand who named him "Swami Ekrasanand". After learning the Vedas in Kashi, he set out on a journey to various religious places like Mathura, Vrindavan, Haridwar, Rishikesh, etc. When he reached Teekamgarh in Madhya Pradesh, he was warmly welcomed by the king there.

Swami Ekrasanand Saraswati established Daivi Sampad Mandal in 1914, on the principles of 'Sarv Bhoot hite Ratah' based on Daivi Sampatti described in the Sixteenth Chapter of Srimad Bhagwad Gita. This organisation has been involved in propagating the qualities of fearlessness, full cleanliness of conscience, continuous practice of Meditation and Yoga for spiritual knowledge, charity, control over senses, non-violence, truthfulness, sacrifice, peace, mercy, detachment, tenderness, modesty, forgiveness, patience, etc., irrespective of caste, race and religion, in all. The followers of Swami Ekrasanand Saraswati abide by the ten gospels he preached. These gospels spread the message of love, compassion and devotion to God.

The good works of Swami Ekrasanand are being carried forward by his followers who have been involved in setting up various institutions like Sri Ekrasanand Ashram, Sri Ekrasanand Sanskrit Mahavidyalaya, Sri Ekrasanand Adarsh Inter College, Sri Ekrasanand Dharmarth Ayurvedic Hospital, etc. The Daivi Sampad Mandal, established by Swami Ekrasanand Saraswati has continuously been involved in the service of humanity. All institutions of the Daivi Sampad Mandal are working for the welfare of people and propagation of self - control, good conduct and spiritualism by organizing Conferences, Meditation and Yoga training camps, Ayurvedic Health camps, Satsangs, discourses and assemblies.

Swami Ekrasanand Saraswati left for his heavenly abode on 9th September, 1938.

Department of Posts is happy to release a Commemorative Postage Stamp on Swami Ekrasanand Saraswati.

Credits:-

Text	:	Based on the material furnished by the proponent
Stamp/FDC/ Cancellation	:	Alka Sharma

स्वामी एकरसानंद सरस्वती

स्वामी एकरसानंद सरस्वती एक महान संत थे, जिन्होंने अपना संपूर्ण जीवन मानवता की सेवा में समर्पित कर दिया। उनका जन्म 29 अगस्त, 1866 को राजस्थान के जोधपुर जिले के भूरियाना गांव के एक ब्राह्मण परिवार में पंडित राधाकृष्ण और उनकी पत्नी पालूबाई के घर हुआ। बचपन में उनका नाम नारायण दास था।

नारायण दास में बचपन से ही विनम्रता, दया, आदर आदि के गुण दिखने लगे। उन्होंने ऊपरी हिमालय की घाटियों में स्थित बदरीनाथ धाम जाकर गहन ध्यान का अभ्यास किया। तत्पश्चात् वे काशी प्रस्थान कर गए, जहां उनकी भेंट स्वामी गणेशानंद से हुई, जिन्होंने उन्हें 'स्वामी एकरसानंद' नाम दिया। काशी में वेदों की शिक्षा प्राप्त करने के बाद वे विभिन्न धार्मिक स्थानों जैसे मथुरा, वृंदावन, हरिद्वार, ऋषिकेश आदि की यात्रा पर निकल पड़े। मध्य प्रदेश स्थित टीकमगढ़ पहुंचने पर वहां के राजा ने स्वामी एकरसानंद का अत्यन्त आदरभाव से स्वागत किया।

स्वामी एकरसानंद सरस्वती ने श्रीमद्भगवतगीता के 16वें अध्याय में वर्णित दैवी सम्पत्ति पर आधारित 'सर्वभूतहिते रताः' के सिद्धान्तों पर 1914 में दैवी संपद मंडल की स्थापना की। यह संगठन, जाति, समुदाय तथा धर्म का भेदभाव किए बिना, समस्त मनुष्य जाति में निर्भीकता, अंतःकरण की शुद्धता, आध्यात्मिक ज्ञान हेतु निरन्तर ध्यान और योगाभ्यास, दानशीलता, इंद्रियों पर नियंत्रण, अहिंसा, सत्यवादी होने, त्याग, शांति, दया, अनासक्ति, कोमलता, विनयशीलता, क्षमा, धैर्य इत्यादि जैसे गुणों को बढ़ावा देने के प्रति समर्पित है। स्वामी एकरसानंद सरस्वती के अनुयायी उनके दिए दस उपदेशों का शब्दशः पालन करते हैं। ये उपदेश प्रेम, सहानुभूति तथा ईश्वर के प्रति समर्पण भाव का संदेश देते हैं।

स्वामी एकरसानंद सरस्वती के अनुयायी, उनके सत्कर्मों को आगे बढ़ा रहे हैं। ये अनुयायी, विभिन्न संस्थानों की स्थापना से जुड़े रहे हैं जैसे श्री एकरसानंद आश्रम, श्री एकरसानंद संस्कृत महाविद्यालय, श्री एकरसानंद आदर्श इंटर कॉलेज, श्री एकरसानंद धर्मार्थ आयुर्वेदिक अस्पताल, आदि। स्वामी एकरसानंद सरस्वती द्वारा स्थापित दैवी संपद मंडल मानव जाति की सेवा में कार्यरत रहा है। दैवी संपद मंडल के समस्त संस्थान जनकल्याण की दिशा में कार्यरत हैं और सम्मेलनों, ध्यान व योग शिक्षण शिविरों, आयुर्वेदिक स्वास्थ्य शिविरों, सत्संगों, प्रवचनों तथा समागमों के आयोजनों के माध्यम से लोगों में संयम, उत्तम आचरण और अध्यात्म को प्रोत्साहित कर रहे हैं।

दिनांक 9 सितम्बर, 1938 को स्वामी एकरसानंद सरस्वती का स्वर्गवास हो गया।

डाक विभाग, स्वामी एकरसानंद सरस्वती पर स्मारक डाक–टिकट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है।

आभार :–

पाठ	:	प्रस्तावक द्वारा उपलब्ध कराई गई सामग्री पर आधारित
डाक–टिकट / प्रथम दिवस आवरण / विरूपण	:	अलका शर्मा